International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(6): 81-83

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(6): 81-83
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 17-09-2020
Accepted: 24-10-2020

दीपक कालिया
ज़ाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज (प्रातः), दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
दीपक कालिया
ज़ाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज (प्रातः), दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

आधुनिक काव्य "सत्यम्" में सत् चित् आनन्द

दीपक कालिया

प्रस्तावना

आधुनिक संस्कृत काव्य "सत्यम्" आधुनिक संस्कृत जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् प्रो. रसिक विहारी जोशी की कृति है। इसकी रचना सन् 2006–2007 में हुई एवं प्रकाशन 2007 में हुआ। काव्य में 503 पद्य हैं जिनमें कवि ने अपने अनुभवों के आधार पर "सत्य" को प्रकाशित किया है। कवि का मुख्य उद्देश्य "जीवन" को त्रिविध तापों से मुक्त कर सुखमय बनाने का पथ प्रदर्शन करना है। दर्शन में सत् चित् आनन्द तो साधक को कठिन तप द्वारा प्राप्त होता है इस सत् चित् आनन्द हेतु सर्वप्रथम अधिकारी के गुणों से युक्त होने की आवश्यकता है परन्तु इस काव्य में कवि ने व्यवहारिक रूप से सत् चित् आनन्द की प्राप्ति के उपायों का वर्णन किया है। मानव को अपने जीवन को सुखमय बनाने के लिए सर्वप्रथम सत्य मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। परिवार एवं समाज में परिजनों एवं मित्रों के प्रति शुभकामना संदेश एवं अभिवादन से ही चित् प्रसन्न हो जाता है। छोटे–छोटे शिष्टाचार द्वारा ही अपने मन को प्रसन्न कर हम आनन्दानुभूति कर सकते हैं। इन्हीं व्यवहारिक आचरणों पर विशेष बल देते हुए कवि ने काव्य में सत् चित् आनन्द के व्यवहारिक स्वरूप को स्पष्ट किया है।
आनन्दानुभूति के विषय में कवि लिखते हैं–

कुरु कुरु तव चित्तं निर्मलप्रेमपूर्णम्।
स्फुरतु स्फुरतु सत्यं शुद्धचित्तं प्रसन्नम्।। श्लोक (364)

प्रस्तुत शोधपत्र में सत् चित् आनन्द के दार्शनिक दृष्टि से स्वरूप का तथा काव्य में वर्णित व्यवहारिक दृष्टि से सत् चित् आनन्द के स्वरूप का तुलनात्मक विवेचन करने का प्रयास किया गया है।

दार्शनिक दृष्टि से सत् चित् आनन्द का स्वरूप

अद्वैतमतानुसार सत् शब्द सत्तार्थक भाववचन है। अस् भुवि धातु से शतृ प्रत्यय लगाकर निष्पन्न हुआ है। इस प्रकार इसका अर्थ है जो विद्यमान है। त्रिकालबाधित वस्तु ही अर्थात् नाम देश और कालादि का नाश होने पर भी जिसका नाश नहीं होता है, वही सत् है। अद्वैतमत में ब्रह्म का स्वरूप लक्षण बताते हुए उसे सत् स्वरूप कहा है। उपनिषदों में ब्रह्म को पूर्ण सत्य के रूप में स्वीकार किया गया है और कहा है कि ब्रह्म के अतिरिक्त दूसरी कोई सत्ता नहीं है।[1] उस सत्य ब्रह्म का नाम भी सत् ही है।[2] यद्यपि ब्रह्म शब्द का प्रयोग सभी स्थलों पर अध्यात्मपरक नहीं है, पर जहां भी इसका अध्यात्मपरक अर्थ है वहां यह सर्वोच्च सत् रूप में वर्णित है।[3]
आदिगुरू शंकराचार्य ने तैत्तिरीय उपनिषद् भाष्य में सत् शब्द की व्याख्या करते हुए कहा है कि जिस रूप से जो पदार्थ निश्चित होता है, अनुभूति का विषय बनता है, यदि वह उस रूप को न त्यागे तो वह पदार्थ सत् कहलाता है।[4] जो वस्तु नित्य है वही सत्य भी है। जो सत् है वह आत्मा ही है। उसी से समस्त जगत् की सत्ता है। वही परमार्थ सत् है। इसी प्रकार ब्रह्म को सामान्य कहा है। सामान्य से तात्पर्य सत् ही है।[5] स्वामी विद्यारण्य ने पंचदशी में सत्य होने का अर्थ बाध से रहित होना कहा है।[6] बाध का शाब्दिक अर्थ निषेध। जिसका कभी भी निषेध न हो सके, ऐसी वस्तु ब्रह्म ही है।
रामानुजाचार्य भी यद्यपि ब्रह्म को सत् मानते है परन्तु वे सत् ब्रह्म का गुण मानते हुए ब्रह्म को सविशेष बताते हैं। सत् शब्द का अर्थ अद्वितीय करते हुए कहा गया है कि जो पूर्णतया निरूपाधिक एक है वह सत् है।[7]

चित्– चित् शब्द "चिति संज्ञाने" धातु से क्विप् प्रत्यय लगकर निष्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है चेतन या अनुभव। विशिष्टाद्वैतमतानुसार ब्रह्म चित्स्वरूप है जो कि ब्रह्म के ज्ञान स्वरूप का ही द्योतक है।

आचार्य गौडपाद द्वारा माण्डूक्यकारिका में ब्रह्म के प्रति अभिन्न रूप से कहे गए "ज्ञानालोक" "अनिद्रम्" अ स्वप्न सकृतविभात सर्वज्ञ, सकृज्ज्योति इत्यादि विशेषण ब्रह्म के चित्त स्वरूप के प्रतिपादक है।[8] इनसे चित्त के प्रमुख रूप से दो अर्थ ज्ञात होते हैं– ज्ञान एवं प्रकाश।

आनन्द– दार्शनिक दृष्टि से आनन्द ब्रह्म का स्वरूप है, कोई गुण या धर्म नहीं। अद्वैतमत के आचार्य गौडपाद ने माण्डूक्यकारिका में 'तुरीय' तत्व के वर्णन में उपनिषद् में कहे गए "शान्त, शिव, अभय विशेषणों" की विवृत्ति में तुरीय आत्मा ब्रह्म को सभी दुःखों की निवृत्ति में समर्थ कहा है। यही उसके आनन्दत्व का अभिव्यंजक है क्योंकि स्वयं आनन्द से पृथक् या भिन्न कुछ भी दुःख–निवारण नहीं हो सकता।[9] सुप्रशान्त, समाधि, अभय इन विशेषणों से ब्रह्म की आनन्दरूपता कही है।[10]
विशिष्टाद्वैत मतानुसार आनन्द ब्रह्म का गुण है।[11] अतः ब्रह्म आनन्दयुक्त होने के कारण सगुण भी है।
शंकराचार्य ने भी "आनन्दमयोऽभ्यासात्" इस सूत्र की व्याख्या करते हुए ब्रह्म को आनन्दस्वरूप ही बताया है। शंकराचार्य के मतानुसार आनन्दमय शब्द में मयट् प्रत्यय प्राचुर्य अर्थ में ही विकार अर्थ में नहीं है। अतः ब्रह्म ही आनन्दमय है।
इस प्रकार सत् चित् आनन्द दार्शनिक दृष्टि से ब्रह्म के स्वरूप लक्षण है।

सत्यम्[12] काव्य में सत् चित् आनन्द– व्यवहारिक दृष्टि से 'सत्' का अर्थ काव्य में सत्मार्ग है जो कि सदा रहने वाला अर्थात् नित्य है

अथो जनानां हित काम्ययाऽहं
वदामि सत्यं हि सदैव नित्यम्। श्लोक (1)

कवि ने कहा कि 'सत्य' को जानने के लिए मैं संक्षेप से कुछ अच्छे नियमों को समझाता हूं जिनका पालन करने से मनुष्य शीघ्र ही 'सत्य' में पारंगत हो जाते हैं। इसमें उन्होंने प्रातःकाल से प्रारम्भ कर रात तक हमें दिनचर्या में क्या–क्या करना है? इसका विस्तार से विवेचन किया है। इसमें उन्होंने हरिस्मरण, शारीरिक व्यायाम, उचित खान पान पर बल दिया। जीवन में वैवाहिक निर्णय एवं अन्य निर्णय सोचकर करने को कहा है–

एकोऽयं हि विनिर्णयः प्रकुरूते सर्वं सुखं जीवने
दुःखं वाथ पदे पदे वितनुते तत्सावधनं चिनु। श्लोक (13)

सत् से तात्पर्य सद् नियमों का पालन करना है सन्मार्ग पर चलना और सत्यभाषण है कहा है–

अतो वच्मि नित्यं सदा सत्यमेव
ब्रुवंस्त्वं लभेथाः प्रभोर्भक्तिमेव।
प्रभोर्भक्तिमार्गे सदा चित्तशुद्धिः
प्रशान्ता प्रबुद्धा भवेद् बुद्धिवृत्तिः।। श्लोक (262)

कवि ने कहा है कि सबके सामने दो रास्ते हमेशा खुले रहते हैं। पहला रास्ता सत्य का है और दूसरा रास्ता सत्य से विपरीत जाने वाला असत्य का है। ज्ञानी व्यक्ति सत्य के मार्ग का चयन करते है और घमण्डी व्यक्ति असत्य के मार्ग को चुनते हैं। इस प्रकार अपने–अपने मार्ग के अनुसार सत्य के मार्ग वाला शान्ति को प्राप्त करता है और असत्य के मार्ग वाला उपद्रवों को प्राप्त करता है।

"सर्वेषां पुरतो विजृम्भिततरं मार्गद्वयं" संस्फुट
पन्थाः सत्यपरस्तथापरपथः सत्यात् पराङ्ञ्च्छति। श्लोक (43)

इस प्रकार सत् से तात्पर्य सन्मार्ग का आचरण है।

"चित्" शब्द का अर्थ काव्य में मन है। चित्तवृत्ति से तात्पर्य मनोवृत्ति है। कवि ने कहा है कि जब चित्त की वृत्ति हमेशा आदर्शों में उन्मुख रहती है जब तुम्हारा शरीर भी हमेशा सदाचार में परायण रहता है। तो न कोई रोग होता है और न कोई चिन्ता रहती है। अनन्त धन तुम्हारे प्रति प्रसन्न हो जाता है–

यदा चित्तवृत्तिः सदादर्शनिष्ठा
यदा ते शरीरं सदाचारलग्नम्।
न वा कोऽपि रोगो न वा कापि चिन्ता
धनं वाथ तुम्यं प्रसीदेदनन्तम्।। श्लोक (81)

मधुर वाणी, उदारता, अहंकार रहित होना और हमेशा सत्य मार्ग पर ही चलते रहना। ऐसा करने से तुम्हारे जीवन में अत्यन्त निर्मल यश फैल जाएगा और तुम्हारी प्रशस्त आयु भी दीर्घ हो जाएगी–

मा ब्रूहि त्वचं मिथ्यां सततमिह सदा सत्यमार्गवृणीथा
एवं त्वज्जीवने स्याद् विमलतरयशो दीर्घमायुः प्रशस्तम्। श्लोक (88)

सुख धन पर अथवा शरीर पर निर्भर नहीं करता सुख तो शान्त चित्त पर निर्भर करता है–

"सुखं निर्भरं नो शरीरे धने वा
सुखं चास्ति सत्यं मनः शान्तमास्ते" श्लोक (259)

मन अर्थात् चित्त को प्रसन्न रखने में एक अच्छे मित्र की महत्वपूर्ण भूमिका होती है इस विषय में कवि कहते हैं–

वरं मित्रं पुष्पं न हि भवति शुष्कं क्वचिदपि
जगत्यां पुष्पं तु प्रतिदिनमथो शुष्यति सदा,
वरं मित्रं कृत्वा निसतु सदा तस्य वचनेः
सुगन्धं संपीय प्रमुदितमना जीवतु शतम्। श्लोक (77)

अर्थात् एक अच्छा मित्र ऐसा पुष्प होता है जो कभी भी नहीं मुरझाता। इस संसार में सभी पुष्प प्रतिदिन मुरझा कर सूख जाते हैं। इसलिए एक अच्छा मित्र बनाकर उसकी सलाहों की सुगन्ध को सूंघ–सूंघ कर रहना चाहिए, तो प्रसन्न मन से सौ वर्ष जीओगे।
कवि ने काव्य में यह संदेश दिया है कि सत्य मार्ग पर चलकर चित्त प्रसन्न हो जाता है और चित्त की प्रसन्नता ही आनन्द है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते है कि जीवन में आनन्द प्राप्ति हेतु मन को सत्कर्म में लगाना चाहिए और सत्कर्म या सदाचार है सत्य भाषण परोपकार, मधुर भाषण, वृद्धोपसेवा, सत्यंगति उदारता, अच्छी मित्रता आदि। कवि ने कहा है–

"त्वयि प्रदीप्तः प्रचकास्ति तेजः
स्फुलिंग इह नापचितिं प्रयाति
यत स्तवास्ते ननु चित्तशान्तिः
तस्याः फलं त्वयि सर्वे प्रसन्नाः। श्लोक (412)

निष्कर्ष

हम कह सकते हैं कि दार्शनिक दृष्टि से सत् चित् आनन्द का जो स्वरूप है वह इस काव्य में पूर्णतया भिन्न है क्योंकि दार्शनिकों ने सत् चित् आनन्द ब्रह्म का स्वरूप बताया है ब्रह्म सत् स्वरूप है चित् स्वरूप है तथा आनन्द स्वरूप है परन्तु 'सत्यम्' काव्य में सत् चित् आनन्द का वर्णन व्यवहारिक दृष्टिकोण पर आधारित है। काव्य में सत् का पालन करते हुए चित्त (मन) की प्रसन्नता को स्पष्ट किया है चित्त को प्रसन्न रखने का मार्ग बताकर आनन्दानुभूति का विवेचन किया है।

इस प्रकार 'सत्यम्' काव्य वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त लाभप्रद एवं प्रेरणास्रोत है। आज मानव भौतिक सुख साधनों से सम्पन्न होता हुआ भी मानसिक सुखों से कोसों दूर है। मानसिक सुख की प्राप्ति का मार्ग बताना इस काव्य की अन्यतम विशेषता है। व्यवहारिकता की दृष्टि से 'सत्य' आधुनिक संस्कृत साहित्य की विशिष्ट कृति है।

सन्दर्भ

1. सत्यस्थ ब्रह्मणो नाम सत्यमिति।
   – शांकरभाष्य 'बृहदारण्यकोपनिषद्' (4–3)
2. (i) बृहदारण्यकोपनिषद् (2–4–5)
   (ii) मुण्डकोपनिषद् (1–1–3)
3. कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्।
   तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्।।
   (श्रीमद्भगवद्गीता 3/15)
   शांकरभाष्य, हिन्दी अनुवाद सहित–अनुवादक–श्रीहरिकृष्णदास गोयन्दका, गीता प्रेस, गोरखपुर 1984 ई. सन् 91
4. यद्रूपेण यन्निश्चितं तद्रूपं न व्यभिचरति तत्सत्यम्। (तैत्तिरीयोपनिषद् शांकरभाष्य सहित) गीता प्रेस, 1946 ई. द्वितीय संस्करण पृ. 103–104
5. This Sāmanya is the Idea of beings in general Pure being (Sat.)
   Pandey R.R. "Man and the Universe" Delhi, 1978 A.D., pp. 149
6. सत्यत्व बाधराहित्यम्। स्वामी विद्यारण्य "पंचदशी", नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, 1922 ई. सन् प्रथम संस्करण
7. Sat is the absolute or the unconditioned one without a second. The philosophy as viśistādvaita" Srinivāsāchari P.N. Adyar Madras, 1978 A.D. p. 106
8. माण्डूक्यकारिका (1/16, 3/35, 36, 37)
9. माण्डूक्यकारिका (1/10)
10. सुप्रशान्तः सकृज्ज्योतिः समाधिरचलोऽभयः। माण्डूक्यकारिका (3/37)
11. Śrinīvāsadasa. "Yatīndramatadipikā" (Translated by Swāmi Ādidevānanda) Madras 1978 A.D., p 132
12. सत्यम् "The Universal Truth – Prof. R.V. Joshi 2007, चौरवम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान दिल्ली